<table>
<tr><th colspan="3">॥ स्वामी विवेकानंद कृत अम्बा स्तोत्रम् ॥</th></tr>
<tr><td rowspan="2">१</td><td>का त्वं शुभकरे सुखदुःखहस्ते
आघूर्णितं भवजलं प्रबलोर्मिभङ्गैः ।
शांतिं विधातुमिह किं बहुधा विभग्नाम्
मतः प्रयत्नपरमासि सदैव विश्वे ॥</td><td>O benevolent mother, in your two hands are the happiness and the sorrow. Who are you? The mighty waves in the ocean of material existence is ever tossing over with roaring sound! are you the one who patiently endeavours to re-establish the broken peace in this world?</td></tr>
<tr><td colspan="2">ओ प्रेममयी माता ! आपके दोनों हाथों में सुख और दुःख है ।
आप कौन है ? इस भौतिक विश्व में गरजती और उछलती हुई सागर की लहरें जैसी आप,
तूटे हुए विश्व को पुनःनिर्मित करने का शांतिपूर्ण प्रयास करती है ।</td></tr>
<tr><td rowspan="2">२</td><td>संपादयत्यविरतं त्वविरामवृता
या वै स्थिता कृतफलं त्वकृतस्य नेत्री ।
सा मे भवत्वनिदिनं वरदा भवानी
जानाम्यहं ध्रुवमिदं धृतकर्मपाशा ॥</td><td>The devi who assigns the fruits of the actions to the respective persons, and one who takes the persons who have transcended karmic law back to her doors, let that bhavani bless me. I know for certain that it is she, who holds the rope of karma in her hands.</td></tr>
<tr><td colspan="2">वह देवी, जो योग्य व्यक्ति को उसके कर्म का फल प्रदान करती है
और जो व्यक्ति अपने श्रेष्ठ कर्मों को उनके चरणों में रखता है,
उसे अपने पास लेनेवाली माँ भवानी, मुझे आशिष दे ।
यह बात निश्चित है कि, एक वो ही है जिनके हाथ में हमारे कर्मों की डोर है ।</td></tr>
<tr><td rowspan="2">३</td><td>को वा धर्मः किमकृतं क्वः कपाललेखः
किंवादृष्टं फलमिहास्ति हि यां विना भोः ।
इच्छापाशैर्नियमिता नियमाः स्वतंत्रैः
यस्या नेत्री भवति सा शरणं ममाद्या ॥</td><td>Let that devi be my eternal shelter, without whom there can be no dharma, adharma, writings of fate or karma and whose free will appears like natural laws to us out of ignorance.</td></tr>
<tr><td colspan="2">हे माँ ! आप ही मेरे लिए शाश्वत आश्रय हो । आपके बिना धर्म, अधर्म, प्रारब्ध और कर्म का कोई अस्तित्व नहीं है । आपकी स्वतंत्र ईच्छा, हमारे लिए तो सहज प्राकृतिक नियम के जैसी है ।</td></tr>
<tr><td rowspan="2">४</td><td>सन्तानयन्ति जलधिं जनिमृत्युजालम्
संभावयन्त्यविकृतं विकृतं विभग्नम् ।
यस्या विभूतय इहामितशक्तिपालाः
नाश्रित्य तां वद कुत शरणं व्रजामः ॥</td><td>All over this entire samsara is expanded the inconceivable energy of devi as the net-trap of birth and death which is destroying and illusioning even the best of souls. Tell me, with whom shall i seek refuge other than she??!!</td></tr>
<tr><td colspan="2">माँ की अकल्प्य शक्ति से रचित, जन्म मृत्यु के जाल जैसा यह संसार नश्वर है, जो महान व्यक्तियों को भी भ्रमित कर देता है । तो फिर हे माँ, आपके सिवा और कौन मेरा आश्रय हो सकता है ?</td></tr>
</table>

<table>
<tr><td rowspan="2">५</td><td>मित्रे रिपौ त्वविषमं तव पद्मनेत्रम्
स्वस्थे दुःस्थे त्ववितथं तव हस्तपातः ।
मृत्युच्छाया तव दया त्वमृतञ्च मातः
मा मां मुञ्चन्तु परमे शुभदृष्टयस्ते ॥</td><td>The compassionate glance of your lotus eyes falls equally on both friend and foe. Your merciful touch is felt by both happy and sorrowful persons in this earth. O mother, this mundane life and its end (death) both are but fragments of your unlimited compassion. O mahavedi, do not remove your purifying glance of compassion from me!</td></tr>
<tr><td colspan="2">कमल जैसी आँखों से बहती हुई आपकी तेजस्वी कृपा, मित्र और शत्रु दोनों पर एक सामान बरसती है । आपके कारुण्य सभर स्पर्श का अनुभव आनंदी और दु:खी हर एक व्यक्ति कर रहा है । हे माँ ! यह भौतिक जीवन और मृत्यु आपकी ही करुणा का एक भाग है । हे माँ ! हमें शुद्ध करनेवाली आपकी कृपा, सदैव हम पर बनाए रखना ।</td></tr>
<tr><td rowspan="2">६</td><td>क्वांबा सर्वा क्व गणनं मम हीनबुद्धेः
धत्तुं दोर्भ्यामिव मतिर्जगदेकधात्रीम् ।
श्रीसञ्चिन्त्यं सुचरणमभयपतिष्ठम्
सेवासारैरभिनुतं शरणं प्रपद्ये ॥</td><td>There is a huge difference between my actual mother and these insignificant praises that i am singing in her name. As if i am trying to embrace the creator of this cosmos with these small arms of a child! I seek the shelter of that mother on whose lotus feet does Lakshmi meditate and below which is the abode of the rare mukti.</td></tr>
<tr><td colspan="2">वह प्रत्यक्ष माँ अंबा और उनका यह मूर्त स्वरूप, जिसके लिए मेरी छोटी बुद्धि से मैं प्रार्थना कर रहा हूँ, इन दोनों के बीच बहुत बड़ा अंतर है । जैसे की बच्चों जैसे मेरे छोटे हाथों से मैं सारे ब्रह्मांड के रचयिता को गले लगा रहा हूँ । उस शाश्वत माता का मैं आश्रय चाहता हूँ, जिनके चरण कमल का ध्यान माँ लक्ष्मी करती है और जहाँ हमें सच्ची मुक्ति मिलती है ।</td></tr>
<tr><td rowspan="2">७</td><td>या मामा जन्म विनयत्यतिदुःखमार्गैः
आसंसिद्धेः स्वकलितैर्ल्ललितैर्विलासैः ।
या मे बुद्धिं सुविदधे सततं धरण्यम्
सांबा सर्वा मम गतिः सफले फले वा ॥</td><td>One who is taking me through the beautiful path filled with mind captivating plays (lila) of unending sorrows and always appearing as noble intelligence in this world, let that benevolent mother be my one and only way, whether i ever succeed in my path or fail in my struggles !!</td></tr>
<tr><td colspan="2">अनंत दु:ख एवं उनकी लीलाओं से भरे इस सुंदर रास्ते पर जो मुझे ले जा रही है, जिनकी दिव्या बुद्धि का प्रभाव विश्वमें दिखाई दे रहा है, वह प्रेममयी माँ अंबा ही मेरा एक मात्र आश्रय हो, चाहे इस रास्ते में मुझे साफल्य मिले, या मेरे संघर्षों में वैफल्य ।</td></tr>
</table>